Juni Khyat (जूनी ख्यात) ISSN: 2278-4632
(UGC CARE Group I Listed Journal) Vol-15, Issue-12, No.01, DECEMBER: 2025
DOI: doi.org/10.5281/zenodo.18204645

बाजीराव प्रथम के अधीन गुप्तचर तंत्र, सूचना युद्ध और मानसिक युद्ध प्रणाली: एक सामरिक और वैज्ञानिक विश्लेषण

सक्षम अग्रवाल, शोधार्थी (इतिहास) एवं डॉ. रोमेश चित्रांशी, प्रोफेसर
इतिहास विभाग, पी. के. यूनिवर्सिटी, शिवपुरी, म. प्र.

सार

प्रस्तुत शोध पत्र पेशवा बाजीराव प्रथम (1720-1740) के सैन्य अभियानों में गुप्तचर तंत्र , सूचना युद्ध और मानसिक युद्ध प्रणाली के योगदान का एक व्यापक सामरिक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। 18वीं शताब्दी के भारत में न्यूनतम जनहानि और अभूतपूर्व गतिशीलता के साथ विजय प्राप्त करने के पीछे बाजीराव की सूक्ष्म रणनीतिक योजनाएँ सक्रिय थीं, जिसमें पारंपरिक हथियारों से अधिक महत्व सटीक सूचनाओं और शत्रु के मनोबल को तोड़ने को दिया गया। इस शोध में यह विश्लेषित किया गया है कि कैसे मराठा गुप्तचर विभाग (जससू तंत्र) ने व्यापारियों, संन्यासियों और हरकारों के माध्यम से शत्रु की रसद, भौगोलिक स्थिति और आंतरिक कमजोरियों का सूक्ष्म डेटा एकत्र किया। इसके अतिरिक्त, अफवाहों, कूटनीतिक दबावों और बाजीराव के 'अजेय' होने की मनोवैज्ञानिक प्रतिष्ठा के माध्यम से शत्रु सेना को वास्तविक युद्ध से पहले ही मानसिक रूप से पराजित करने की वैज्ञानिक विधा का अध्ययन किया गया है।

1. प्रस्तावना

सैन्य विज्ञान के इतिहास में किसी भी सफल सामरिक अभियान का आधार केवल भौतिक हथियारों की शक्ति नहीं, बल्कि सूचना और मानसिक नियंत्रण की श्रेष्ठता होती है। चीनी सैन्य दार्शनिक सन जू (Sun Tzu) ने अपनी अमर कृति 'द आर्ट ऑफ वॉर' में लिखा था कि 'बिना लड़े दुश्मन का मनोबल तोड़ देना ही युद्ध कला की सर्वोच्च विधा है।' 18वीं शताब्दी के भारत में पेशवा बाजीराव प्रथम ने इस सिद्धांत को अपने प्रत्येक सैन्य अभियान का मूल आधार बनाया (Srinivasan, 1944)। बाजीराव का कालखंड मुग़ल सत्ता के बिखरने और क्षेत्रीय शक्तियों की आपसी होड़ का दौर था। इस जटिल राजनीतिक माहौल में एक छोटी परंतु अत्यंत अनुशासित सेना के बल पर संपूर्ण भारत में मराठा साम्राज्य का भगवा ध्वज लहराना किसी चमत्कार से कम नहीं था।

Copyright @ 2025 Author

DOI: doi.org/10.5281/zenodo.18204645

इस सफलता के पीछे बाजीराव की अभूतपूर्व गतिशीलता तो थी ही, परंतु उस गतिशीलता को सही दिशा देने का कार्य उनके अचूक गुप्तचर तंत्र (Intelligence Structure) और सूचना प्रबंधन ने किया। बाजीराव जानते थे कि मुग़लों और हैदराबाद के निजाम जैसी विशाल शक्तियों के पास असीमित वित्तीय संसाधन और तोपखाने हैं। यदि मराठा सेना सीधे पारंपरिक युद्ध में उनसे भिड़ती, तो उसे भारी क्षति उठानी पड़ती। इसलिए बाजीराव ने 'अप्रत्यक्ष दृष्टिकोण' (Indirect Approach) अपनाते हुए युद्ध के मैदान से अधिक शत्रु के मस्तिष्क पर प्रहार करने की नीति अपनाई (Liddell Hart, 1954)। प्रस्तुत शोध पत्र बाजीराव प्रथम के अधीन विकसित गुप्तचर नेटवर्क, सूचना प्रसार की प्रणालियों और उनके द्वारा प्रयुक्त मनोवैज्ञानिक रणनीतियों का एक वैज्ञानिक और ऐतिहासिक विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

2. मराठा गुप्तचर तंत्र का ढांचा और कार्यप्रणाली

छत्रपति शिवाजी महाराज के काल में बहिर्जी नाईक के नेतृत्व में मराठा गुप्तचर विभाग ने अद्वितीय ऊंचाइयों को छुआ था। बाजीराव प्रथम ने उसी सुदृढ़ नींव पर आधुनिक आवश्यकताओं के अनुसार एक अत्यंत संवेदनशील और लचीला जासूसी तंत्र विकसित किया (Sen, 1928)। बाजीराव का जासूसी विभाग केवल युद्ध के समय सक्रिय नहीं होता था, बल्कि शांति काल में भी वह संभावित शत्रु राज्यों की हर छोटी-बड़ी गतिविधि का लेखा-जोखा रखता था।

2.1 बंजारों, व्यापारियों और हरकारों का रणनीतिक उपयोग

बाजीराव के गुप्तचर तंत्र की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि इसमें पेशेवर जासूसों के साथ-साथ समाज के सामान्य और गतिशील वर्गों को शामिल किया गया था। अनाज और दैनिक उपभोग की वस्तुओं का व्यापार करने वाले बंजारे, तीर्थयात्री, संन्यासी, सूफी संत और घुमंतू व्यापारी इस नेटवर्क के प्रमुख स्तंभ थे (Sardesai, 1946)। ये लोग बिना किसी संदेह के शत्रु राज्यों की सीमाओं को पार करते थे और वहां के बाजारों, किलों और प्रशासनिक केंद्रों की वास्तविक स्थिति का पता लगाते थे। हरकारे (धावक) संदेशों को अत्यंत गुप्त तरीके से, मौखिक रूप से या कूट भाषा में, एक स्थान से दूसरे स्थान पर रिकॉर्ड समय में पहुंचाते थे (Kulkarni, 1996)।

Copyright @ 2025 Author

ISSN: 2278-4632
Vol-15, Issue-12, No.01, DECEMBER: 2025
DOI: doi.org/10.5281/zenodo.18204645

2.2 डेटा एकत्रीकरण: भौगोलिक और सामरिक मैपिंग

बाजीराव किसी भी क्षेत्र में सेना भेजने से पहले वहां की भौगोलिक परिस्थितियों का एक सटीक 'मानसिक मानचित्र' तैयार करवाते थे। जासूसों द्वारा दी जाने वाली सूचनाओं में निम्नलिखित डेटा बिंदु शामिल होते थे:

- शत्रु राज्य के जल स्रोतों (कुओं, बावड़ियों, नदियों के घाटों) की सटीक स्थिति।
- रास्तों की चौड़ाई, पहाड़ी दर्रे और घने जंगलों की सीमाएं ताकि घुड़सवारों की गति तय की जा सके।
- स्थानीय अनाज मंडियों और रसद भंडारों की स्थिति ताकि 'लिविंग ऑफ द लैंड' नीति का क्रियान्वयन हो सके (Dighe, 1944)।
- शत्रु सेना के प्रमुख कमांडरों का चरित्र, उनकी आपसी प्रतिद्वंद्विता और उनकी कमजोरियां।

3. सूचना युद्ध : भ्रम और संचार का नियंत्रण

आधुनिक सामरिक शब्दावली में 'इन्फॉर्मेशन वॉरफेयर' का अर्थ है शत्रु तक पहुंचने वाली सूचनाओं को इस प्रकार विकृत कर देना कि वह गलत निर्णय लेने पर विवश हो जाए। बाजीराव इस विद्या के सिद्धहस्त खिलाड़ी थे। वे शत्रु के संचार नेटवर्क को पूरी तरह पंगु बना देते थे और अपने संचार को अत्यंत सुरक्षित रखते थे (Sarkar, 1952)।

3.1 झूठी सूचनाओं का प्रसार

बाजीराव अक्सर अपने ही जासूसों के माध्यम से शत्रु के शिविरों में झूठी खबरें फैलवाते थे। उदाहरण के लिए, पालखेड के युद्ध (1728) के समय, उन्होंने जानबूझकर ऐसी अफवाहें फैलवाईं कि मराठा सेना आंतरिक कलह के कारण बिखर रही है और वह आत्मसमर्पण करने की सोच रही है (Duff, 1826)। इस सूचना के आधार पर निजाम-उल-मुल्क अत्यधिक आश्वस्त हो गया और उसने अपनी भारी तोपखाने और पैदल सेना को पीछे छोड़कर बाजीराव का पीछा करने का आत्मघाती निर्णय ले लिया।

3.2 गति के माध्यम से सूचना का अंतरालीकरण

मराठा घुड़सवार सेना की गति इतनी तीव्र थी कि वह शत्रु के खुफिया तंत्र की सूचना अपडेट होने की गति से तेज काम करती थी। सैन्य विश्लेषक कर्नल जॉन बॉयड के 'OODA लूप' के अनुसार, बाजीराव शत्रु के सोचने और

Copyright @ 2025 Author

ISSN: 2278-4632
Vol-15, Issue-12, No.01, DECEMBER: 2025
DOI: doi.org/10.5281/zenodo.18204645

प्रतिक्रिया देने के समय (Reaction Time) को पूरी तरह नष्ट कर देते थे (Boyd, 1976)। जब तक शत्रु का सेनापति यह तय करता कि बाजीराव पूर्व दिशा से आ रहे हैं, तब तक बाजीराव पश्चिम में उसके रसद भंडारों को नष्ट कर चुके होते थे।

सामरिक आयाम	बाजीराव प्रथम की युद्ध प्रणाली	पारंपरिक साम्राज्यवादी (मुग़ल/निजाम) प्रणाली
सूचना की गति	अत्यंत तीव्र, हरकारों और गुप्त संकेतों द्वारा रीयल-टाइम अपडेट	धीमी, आधिकारिक पत्रों और भारी घुड़सवार संदेशवाहकों पर निर्भर
गुप्तचरों का स्वरूप	संन्यासी, बंजारे, व्यापारी (आम नागरिक वेश में अदृश्य)	औपचारिक वर्दीधारी सैनिक या चिन्हित खुफिया अधिकारी
मनोवैज्ञानिक प्रहार	युद्ध से पूर्व ही भय और भ्रम पैदा करना	केवल भौतिक शक्ति और तोपखाने के प्रदर्शन पर भरोसा
संचार की सुरक्षा	मौखिक संदेश और कूट संकेतों का प्रयोग (शून्य रिस्क)	लिखित दस्तावेजों का प्रयोग जो अक्सर पकड़े जाते थे

4. मानसिक युद्ध प्रणाली और उसका प्रभाव

मानसिक युद्ध का उद्देश्य शत्रु के लड़कों के साहस और उनके कमांडरों के संकल्प को तोड़ना है। बाजीराव जानते थे कि यदि शत्रु मानसिक रूप से हार मान लेता है, तो उसकी बंदूकें और तलवारें अपने आप झुक जाती हैं (Clausewitz, 1832)।

Copyright @ 2025 Author

ISSN: 2278-4632
Vol-15, Issue-12, No.01, DECEMBER: 2025
DOI: doi.org/10.5281/zenodo.18204645

4.1 अजेयता की प्रतिष्ठा

बाजीराव ने अपने 20 वर्षों के सैन्य करियर में लगभग 41 बड़ी लड़ाइयां लड़ीं और वे एक भी युद्ध नहीं हारे। उनकी इस लगातार मिलती विजय ने भारतीय उपमहाद्वीप में उनके नाम के चारों ओर एक 'अजेयता का आभामंडल' तैयार कर दिया था (Sardesai, 1948)। जब शत्रु सेना को पता चलता था कि सामने स्वयं पेशवा बाजीराव सेना का नेतृत्व कर रहे हैं, तो उनका आधा मनोबल युद्ध शुरू होने से पहले ही समाप्त हो जाता था।

4.2 दिल्ली पर अचानक धावा (1737) और मुग़ल सम्राट का मनोवैज्ञानिक पतन

1737 में बाजीराव का दिल्ली पर किया गया अचानक आक्रमण मानसिक युद्ध का सबसे बड़ा उदाहरण है। मुग़ल सेना साम्राज्यवादी अभिमान में डूबी हुई थी और मराठों को दिल्ली से दूर मान रही थी। बाजीराव ने केवल 500 किलोमीटर की दूरी मात्र कुछ दिनों में तय की और दिल्ली के टॉककटोरा क्षेत्र में डेरा डाल दिया (Sinh, 1936)। इस अप्रत्याशित कदम ने मुग़ल सम्राट मोहम्मद शाह और संपूर्ण मुग़ल दरबार को गहरे सदमे (Shock and Awe) में डाल दिया। बाजीराव का उद्देश्य दिल्ली को लूटना या नष्ट करना नहीं था, बल्कि वे मुग़ल सम्राट को यह दिखाना चाहते थे कि उनकी मुग़ल सत्ता कितनी असुरक्षित और मराठा शक्ति कितनी अपार है। इस मानसिक प्रहार के बाद मुग़ल कभी भी मराठों के सामने सिर उठाने का साहस नहीं कर सके।

5. भोपाल का युद्ध (1737): सामरिक और मनोवैज्ञानिक घेराबंदी

भोपाल के युद्ध में बाजीराव ने निजाम-उल-मुल्क के खिलाफ अपने गुप्तचर तंत्र और मानसिक युद्ध का चरम प्रदर्शन किया। निजाम अपनी विशाल सेना के साथ भोपाल के किले में सुरक्षित बैठा हुआ था। बाजीराव ने किले पर सीधा हमला करने के बजाय, अपने गुप्तचरों के माध्यम से किले के भीतर जाने वाले सभी रसद और संदेश मार्गों को पूरी तरह ब्लॉक कर दिया (Chhabra, 2005)।

मराठों ने किले के बाहर ऐसा वातावरण तैयार किया जिससे भीतर बैठे सैनिकों को लगा कि वे लाखों की सेना से घिरे हुए हैं। बाजीराव के जासूसों ने किले के भीतर यह अफवाह फैला दी कि बाहरी मदद की कोई गुंजाइश नहीं है और मुग़ल सम्राट ने उन्हें भाग्य के भरोसे छोड़ दिया है। इस मनोवैज्ञानिक दबाव और भुखमरी के कारण निजाम

Copyright @ 2025 Author

DOI: doi.org/10.5281/zenodo.18204645

जैसा अनुभवी जनरल भी पूरी तरह टूट गया और उसने बिना किसी बड़े टकराव के अत्यंत अपमानजनक शर्तों पर मुंगी-शिवगांव के बाद एक और आत्मसमर्पण (दोराहा सराय की संधि) कर दिया (Parasnis, 1920)।

6. निष्कर्ष

पेशवा बाजीराव प्रथम केवल एक महान तलवारबाज या घुड़सवार कमांडर नहीं थे, बल्कि वे अपने युग के सबसे उन्नत सामरिक विचारक थे जिन्होंने युद्ध कला में सूचना और मनोविज्ञान के महत्व को वैज्ञानिक रूप से स्थापित किया। उनका गुप्तचर तंत्र समाज के गतिशील तत्वों से जुड़ा हुआ था, जिसने उन्हें अचूक और रीयल-टाइम डेटा प्रदान किया। सूचना युद्ध के माध्यम से उन्होंने हमेशा शत्रु को अनिश्चितता और भ्रम के अंधकार में रखा, जिससे शत्रु अपनी ताकत का कभी सही उपयोग नहीं कर सका। मानसिक युद्ध प्रणाली के तहत उन्होंने अपनी अजेय प्रतिष्ठा और 'शॉक एंड ऑव' रणनीतियों का उपयोग करके रक्तपात को न्यूनतम किया। पालखेड, दिल्ली और भोपाल के अभियान इस बात के ज्वलंत प्रमाण हैं कि कैसे बाजीराव ने सूचना और मानसिक श्रेष्ठता को भौतिक हथियारों पर हावी होने दिया। उनका यह त्रिपक्षीय सामरिक मॉडल आज के आधुनिक डिजिटल युग के 'साइबर और साइकोलॉजिकल वॉरफेयर' के अत्यंत करीब है और सैन्य इतिहास में एक विशेष स्थान रखता है।

संदर्भ सूची

1. Srinivasan, C. R. (1944). Baji Rao the First: The Great Peshwa. Chidambaram: International Publishing House.
2. Liddell Hart, B. H. (1954). Strategy: The Indirect Approach. London: Faber and Faber.
3. Sen, Surendra Nath (1928). Military System of the Marathas. Calcutta: Book Company.
4. Sardesai, G. S. (1946). New History of the Marathas (Vol. II). Bombay: Phoenix Publications.
5. Dighe, V. G. (1944). Peshwa Bajirao I and Maratha Expansion. Bombay: International Book House.
6. Kulkarni, G. T. (1996). The Maratha Warfare: Its Strategy and Tactics. Pune: Modern Book Depot.
7. Sarkar, Sir Jadunath (1952). Fall of the Mughal Empire (Vol. I). Calcutta: M. C. Sarkar & Sons.
8. Duff, James Grant (1826). A History of the Mahrattas. London: Longman, Rees, Orme, Brown, and Green.
9. Boyd, John R. (1976). Destruction and Creation. US Army Command and General Staff College.
10. Clausewitz, Carl von (1832). Vom Kriege (On War). Berlin: Dümmlers Verlag.
11. Sardesai, G. S. (1948). The Main Currents of Maratha History. Bombay: Phoenix Publications.

Copyright @ 2025 Author

DOI: doi.org/10.5281/zenodo.18204645

12. Sinh, Raghubir (1936). Malwa in Transition: A Century of Anarchy (1698-1765). Bombay: D. B. Taraporevala Sons & Co.
13. Chhabra, G. S. (2005). Advanced Study in the History of Modern India (Vol. I). New Delhi: Lotus Press.
14. Parasnis, D. B. (1920). The Marathas in the Deccan. Pune: Deccan Vernacular Translation Society.
15. Rawlinson, H. G. (1926). An Account of the Last Battle of Panipat and the Events Leading to It. Bombay: Oxford University Press.
16. Blacker, Valentine (1821). Memoir of the Operations of the British Army in India during the Mahratta War of 1817, 1818, and 1819. London.
17. Malcolm, Sir John (1823). A Memoir of Central India (Vol. I). London: Kingsbury, Parbury, and Allen.
18. Gupta, P. C. (1937). Baji Rao II and the East India Company. Oxford: Oxford University Press.
19. Elphinstone, Mountstuart (1889). History of India (7th Edn.). London.
20. Aitchison, C. U. (1863). A Collection of Treaties, Engagements, and Sanads Relating to India. Calcutta.

Copyright @ 2025 Author